डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

विषय- संस्कृत
बी० ए० स्नातक सेमेस्टर - 1

सन्धि प्रकरण

सन्धि विचार (अच्सन्धि/स्वरसन्धि)

'सन्धि' शब्द का साधारण अर्थ है - 'मेल'। व्याकरणशास्त्र में दो अक्षरों को मिलाने का कार्य सन्धि कहलाता है। सन्धि के विषय में निम्न नियम है-

संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः।
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते ॥

अर्थात् एकपद के भिन्न-भिन्न अवयवों में, धातु और उपसर्ग में तथा समास में सन्धि अवश्य करना चाहिए। वाक्य के अलग-अलग शब्दों के बीच में सन्धि करना या न करना वक्ता की इच्छा पर निर्भर है। सन्धि करने पर निम्न परिवर्तन होते हैं-

1. प्रथम शब्द के अन्तिम अक्षर का, जैसे-
   सस् + शम्भुः = स शम्भुः या द्वितीय शब्द के प्रथम अक्षर का, जैसे-
   हरे + अव = हरेऽव। (लोप हो जाता है।)
2. दोनों के स्थान पर कोई नया वर्ण, जैसे-
   उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः। अथवा दो में से किसी एक के स्थान पर नया वर्ण, यथा-
   सुधी + उपास्यः = सुध्युपास्यः (आ जाता है।)
3. दो में से किसी एक का द्वित्व, जैसे-
   प्रत्यङ् + आत्मा = प्रत्यङ्ङात्मा। (हो जाता है)

सन्धि के भेद-

सन्धि के तीन भेद होते हैं।

1. अच्सन्धि (स्वर सन्धि)
2. हल्सन्धि (व्यञ्जन सन्धि)
3. विसर्ग सन्धि।

अच्सन्धि (स्वरसन्धि) -

जब दो स्वरों में परस्पर सन्धि होती है, तो उसे 'स्वर सन्धि' या 'अच्सन्धि' कहते हैं। इस सन्धि के मुख्य नियम इस प्रकार हैं-

1. इको यणचि -

यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ~~ऋ~~, तथा लृ के बाद कोई असवर्ण स्वर (जैसे- 'इ' के बाद 'अ' या 'उ' के बाद 'आ' आदि) आये तो इ, उ, ऋ तथा लृ के स्थान पर क्रमशः य्, व्, र्, और ल् आदेश हो जाते हैं। जैसे- प्रति + एकम् = प्रत्येकम्, नदी + उदकम् = नद्युदकम्।

2. एचोऽयवायाव: -

यदि ए, ओ, ऐ और औ के पश्चात् कोई स्वर आये तो ए, ओ, ऐ और औ के स्थान पर क्रमशः अय्, अव्, आय् और आव् आदेश होते हैं। जैसे- हरे + ए = हरये। गुरु + ए = गुरवे। यकारादि प्रत्यय परे होने पर भी 'ओ' के स्थान पर 'अव्' और 'औ' के स्थान पर 'आव्' हो जाता है। जैसे- गो + यम् = गव्यम्। किन्तु पदान्त ए या ओ के बाद ह्रस्व 'अ' आने पर पूर्व-पर के स्थान पर पूर्वरूप ही होता है।

3. आद् गुण: -

यदि अ या आ के बाद (क) ह्रस्व इ या दीर्घ ई आये, तो दोनों के स्थान पर ~~'ओ'~~ 'ए' हो जाता है। (ख) यदि ह्रस्व उ या दीर्घ ऊ आये, तो दोनों के स्थान पर 'ओ' हो जाता है।

(ग) यदि ह्रस्व ऋ या दीर्घ ॠ आये, तो दोनों के स्थान पर 'अर्' हो जाता है। (घ) यदि ऌ आये, तो दोनों के स्थान पर 'अल्' हो जाता है। यथा- हर + इन्द्रः = हरेन्द्रः आत्म + उन्नति = आत्मोन्नति आदि।

4. वृद्धिरेचि -

जब 'अ' या 'आ' के पश्चात् (क) 'ए' या 'ऐ' आये, तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' हो जाता है, और (ख) यदि 'ओ' या 'औ' आये, तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है, जैसे- देव + ऐश्वर्यम = देवैश्वर्यम, परम + औषधिः = परमौषधिः आदि।

5. एङि पररूपम -

अवर्णान्त उपसर्ग के बाद यदि एकार आदि या ओकारादि धातु आये, तो दोनों के स्थान पर पररूप ('ए' या 'ओ') आदेश होता है। यथा- प्र + एजते = प्रेजते। उप + ओषति = उपोषति। आदि।

6. अकः सवर्णे दीर्घः -

यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ तथा ऌ के पश्चात् क्रमशः ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ तथा ऌ आये, तो दोनों के स्थान पर दीर्घ स्वर (यथा- आ, ई आदि) हो जाता है। यथा- मुनि + इन्द्रः = मुनीन्द्रः। दैत्य + अरिः = दैत्यारिः।

7. प्लुत प्रगृह्या अचि नित्यम -

प्लुत और प्रगृह्य संज्ञक के बाद स्वर आने पर सन्धि कार्य नहीं होता। जैसे- हरी + एतौ = हरी एतौ। पदान्त ओकारान्त 'गो' शब्द से ह्रस्व अकार परे होने पर भी विकल्प से सन्धि कार्य नहीं होता। यथा- गो + अग्रम = गो अग्रम। इति॥